दिनांक 17 फरवरी, 2020 को जमशेदपुर में जमशेदपुर के शताब्दी दिवस के अवसर पर Stamp और Coffee Table Book का लोकार्पण समारोह के अवसर पर माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण:-

जोहार! नमस्कार!

सर्वप्रथम मैं परम आदरणीय माननीय उप राष्ट्रपति महोदय का झारखण्ड की इस पावन धरती पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करती हूँ। माननीय उप राष्ट्रपति महोदय प्राकृतिक एवं खनिज सम्पदा से समृद्ध इस राज्य को विकास की गति प्रदान करने हेतु सदैव चिंतनशील रहते हैं। झारखण्ड के लोगों के प्रति उनका लगाव सर्वविदित है। विभिन्न स्रोतों एवं माध्यमों के जरिये वे यहाँ के विकास कार्यों एवं विधि-व्यवस्था की जानकारी लेते रहते हैं।

यह सर्वविदित है कि हमारे परम आदरणीय उप राष्ट्रपति महोदय ने माननीय प्रधानमंत्री महोदय के विश्व विख्यात महत्वाकांक्षी योजना ''स्वच्छ भारत अभियान'' को प्रारंभ करने में केन्द्रीय मंत्री के रूप में अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया है। उन्होंने वर्ष 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान कर अपने आशीर्वचन से लोगों को स्वच्छता के प्रति प्रभावी रूप से प्रेरित किया। स्मार्ट सिटी परियोजना में सम्मिलित होने में उनका मार्गदर्शन अहम रहा है। उनकी उपस्थिति हम सभी को एक नवीन ऊर्जा प्रदान करती है।

परम आदरणीय उप राष्ट्रपति महोदय का इस समारोह में अपनी उपस्थिति प्रदान करने से समारोह की शोभा एवं महत्ता और अधिक बढ़ गई है। उप राष्ट्रपति महोदय का स्वच्छ व प्रेरणादायक राजनैतिक और सामाजिक जीवन सर्वविदित है। एक लोकप्रिय जननेता के रूप में प्रतिष्ठित और सम्मानित उप राष्ट्रपति महोदय अपने व्यवहार कुशल, मृदुभाषी एवं संवेदनशील स्वभाव और बेहतर प्रशासनिक अनुभव हेतु सभी के बेहद प्रिय हैं। देश हित में लिये गये कई निर्णयों में इनकी अहम भागीदारी रही है। उनकी संवाद शैली विशिष्ट हैं। संसद के उच्च सदन राज्यसभा के सफल संचालन हेतु इनकी प्रभावी भूमिका को देख सकते हैं। हमारे युवा वर्ग इनसे अत्यन्त प्रेरित हैं। वास्तव में, वे हम सभी के समक्ष सिर्फ देश के उप राष्ट्रपति के रूप में नहीं है अपितु एक अभिभावक के रूप में भी है। ऐसे में आज उप राष्ट्रपति महोदय के कर-कमलों द्वारा जमशेदपुर के शताब्दी दिवस के अवसर पर Stamp और Coffee Table Book का लोकार्पण होना सौभाग्य का विषय है।

मैं 19वीं शताब्दी के महान उद्योगपति और दूरदर्शी व्यक्ति श्री जे.एन. टाटा को नमन करती हूँ और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ। टाटानगर या जमशेदपुर, झारखण्ड की पहचान है। विश्व में लोग झारखण्ड को टाटा स्टील से पहचानते हैं। सूई से लेकर हवाई जहाज तक में टाटा स्टील ने अपनी विशिष्ट पहचान छोड़ी हुई हे। आज से 150 वर्ष पूर्व उस महान व्यक्तित्व की सोच जिसने एक बड़ी कारखाना बनाने के उद्देश्य से उसके लिए जरूरत के सामग्रियों यथा- कोयला, लोहा, चूना पत्थर, समुचित पानी,

धनबाद, बोकारो से कोयला, गोरूमहिसानी, बादामपहाड़ से लोहा पत्थर, मध्य प्रदेश से चूना पत्थर तथा खरकई–स्वर्णरेखा के संगम पर पानी की उपलब्धता को देखा, जहाँ ये सभी पर्याप्त मात्रा में इनको मिलता रहा। मुझे प्रसन्नता इस बात है कि मेरे जन्म स्थान एवं घर के निकट में गोरूमहिसानी और बादामपहाड़ स्थित हैं। टाटाजी ने उन्हें अपना Mother mines बनाया। श्री नरेन्द्रन जी से मुलाकात के समय भी मैंने इस बात का कई बार जिक्र भी किया है।

भारत के माननीय उप राष्ट्रपति महोदय द्वारा जमशेदपुर शहर के 100 वर्ष के नामकरण के अवसर पर Stamp और Coffee Table Book का लोकार्पण किया जाना अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। वर्ष 1919 में भारत के तत्कालीन Governor General of India Lord Chelmsford ने जमशेदजी नुसरवानजी टाटा के सम्मान में इस शहर का नाम बदलकर जमशेदपुर रखा।

विगत 100 वर्षों में जमशेदपुर यहाँ की आबादी के लिए झारखंड राज्य में सबसे आर्थिक रूप से समृद्ध शहर बनने की दिशा में प्रयत्नशील है। जमशेदपुर देश के स्वच्छ और हरियाली शहरों में से एक है। जमशेदपुर औद्योगिक जगत के साथ देश भर के कुशल Professionals को आकर्षित करते हैं। मैं जमशेदपुर शहर के नामकरण के 100 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में स्मारक डाक टिकट जारी करने का निर्णय लेने के लिए भारत सरकार, विशेषकर डाक विभाग की सराहना करना चाहती हूँ।

निश्चित रूप से, जमशेदपुर शहर अपने सामाजिक और शैक्षिक बुनियादी ढांचे, उत्कृष्ट संस्थानों, पार्कों और उद्यानों, झीलों और जीवंत सामाजिक जीवन के साथ भारत का Planned Industrial City के विकास का प्रतीक है। यह शहर पूर्वी भारत की खेल राजधानी के रूप में भी जाना जाता है और कई होनहार खिलाड़ियों को अत्याधुनिक प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जाती है। इनमें एथलेटिक्स, तीरंदाजी और फुटबॉल, क्रिकेट, तैराकी जैसे खेल शामिल हैं।

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों से निवास कर रहे लोगों एवं राज्य की समृद्ध जनजातीय संस्कृति और विरासत को संरक्षित और संरक्षित करना हमारे लिए अनिवार्य विषय है और खुशी की बात है कि टाटा स्टील इसे बखूबी से निभा रहा है। आदिवासी लोक और नृत्य रूप जैसे झूमर, छऊ, मुंडारी और संथाली को न केवल संरक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि उनका पोषण भी किया जाना चाहिए। आदिवासी भाषाओं, परंपराओं और सामाजिक लोकाचार के संरक्षण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में, मैं टाटा स्टील परिवार को हर साल Samvaad Tribal Conclave के आयोजन के लिए बधाई देना चाहती हूँ।

मैं जमशेदपुर के नागरिकों को उनके शहर के शताब्दी वर्ष के अवसर पर हार्दिक बधाई देती हूँ। ,

जय हिन्द! जय झारखण्ड!